02 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा मिलन के झूले में झूलने का अनुभव

➢➢ मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मैं मधुबन में हूँ

➳_ ➳ डायमंड हॉल में बैठी

➳_ ➳ अव्यक्त बापदादा से मिलन मना रही हूँ

➳_ ➳ बाबा मुझे अपनी दृष्टि से निहाल कर रहे हैं

➳_ ➳ वाह मेरा भाग्य

➳_ ➳ वाह मैं भाग्यवान आत्मा

→ बाबा ने मुझे सब झमेलों से

→ बोझ से

→ चिंताओं से मुक्त कर दिया है

➳_ ➳ मुझे सर्व प्राप्तियो से संपन्न कर दिया है

→ मैं सर्व गुणों से

→ खजानों से

→ प्राप्तियो से संपन्न हूँ

➳_ ➳ मैं बाबा का बालक सो मालिक बच्चा हूँ

→ मैं आत्मा अपने मीठे बाबा से

- मिलन मना रही हूँ
- तन से, मन से एक की याद में
- एक ही मिलन के संकल्प में स्थित हूँ

➳_ ➳ अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख मैं

→ मन ही मन मुस्करा रही हूँ

→ पाना था सो पा लिया

→ के गीत गुनगुना रही हूँ

- बाबा के स्नेह सागर में समा रही हूँ
  - ▶ मैं बाबा से अविनाशी मिलन मना रही हूँ
  - ▶ मैं बाप समान बनती जा रही हूँ

➢➢ मैं बाबा के बिलकुल समीप हूँ

➳_ ➳ मैं बाप समान आत्मा हूँ

➳_ ➳ वरदानी मूर्त हूँ

→ बाबा से मिलन की मस्तियो में

→ खुशियों के झूले में झूल रही हूँ

- इस झूले में
- प्रकृति और माया दोनों
- झूले को झूलाने वाले दासी बन रहे हैं
  - सर्व खजाने इस झूले के
  - श्रृंगार बन रहे हैं

→ सभी शक्तिया और गुण

- मेरे श्रृंगार बन रहे हैं

→ ऐसा अनूठा यह मिलन का झूला है

- जिसमे मैं सागर में समा रही हूँ
  - बाप समान बन रही हूँ

→ ये संगम युग है ही

- नदी सागर के समाने का मेला
- इस मेले में मैं अकेली नहीं हूँ
  - बाबा मेरे साथ हैं

→ मेरे सभी झमेले

- समाप्त हो रहे हैं
  - मैं संपन्न मूर्त बन रही हूँ

→ हर संकल्प में, हर बोल में

- हाँ जी का पाठ पक्का कर रही हूँ
  - दिव्य आनंद का अनुभव कर रही हूँ